*पढ़ेगें पढ़ाएंगे अपनी जगह बनाएंगे*

*नारीवादी पद्धति से जुडी शिक्षिकाओं का सम्मेलन*

*7–8 नवम्बर 2017*

सहजनी शिक्षा केन्द्र की शुरूआत 2002 में उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में हुई जो कि वर्तमान में ललितपुर जिले के तीन ब्लॉक महरौनी, मण्डावरा एवं बिरधा के 175 गांव में काम कर रही है। संस्था दलित, आदिवासी और पिछडे समुदाय की महिलाओं के साथ शिक्षा और साक्षरता के माध्यम से उनके सशक्तीकरण और नेतृत्व विकास का काम करती है। सहजनी द्वारा चलाए जा रहे साक्षरता केन्द्रों के माध्यम से गांव की कई पढ़ी लिखी महिलाओं को शिक्षिका बन घर से बाहर निकलने का मौका मिला। ऐसे ही मौके अन्य जगहों पर अलग–अलग संस्थाओं में काम कर रही शिक्षिकाओं को भी मिले हैं। इन अवसरों ने शिक्षिकाओं के जीवन को कई प्रकार से प्रभावित किया। इन शिक्षिकाओं के जीवन में आए बदलाव व उनके द्वारा किए गए काम की साझेदारी एक बडे मंच पर एक दूसरे के साथ करने के लिए सहजनी शिक्षा केन्द्र द्वारा 7–8 नवम्बर 2017 को शिक्षिकाओं का सम्मेलन आयोजित किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य अलग–अलग संस्थाओं द्वारा चलाए जा रहे साक्षरता केन्द्रों पर पढ़ाने वाली शिक्षिकाओं को सम्मानित करना रहा। यह आयोजन अपने आप में एक अनूठा कार्यक्रम रहा जिसमें शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रही शिक्षिकाओं ने भाग लिया। सम्मेलन में बडी संख्या में भागीदारी 4–5 राज्यों की 18 संस्थाओं से आई उन शिक्षिकाओं की रही जो बडी उम्र की महिलाओं के साथ काम करती हैं। सम्मेलन में चल रहे विभिन्न सत्रों के दौरान उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं के साथ पढ़ने–पढ़ाने के तरीके, एवं इस काम को करने में आ रही चुनौतियों के साथ–साथ इस काम से जुडने पर उनके अपने जीवन पर पडने वाले असर आदि के अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम के दौरान आ रही चुनौतियों से जूझते हुए इसे कैसे आगे ले जाया जाए इस पर भी चर्चा हुई।

कार्यक्रम की शुरूआत सहजनी शिक्षा केन्द्र की समन्वयक श्री मति मीना द्वारा आगन्तुकों के स्वागत एवं टीम द्वारा एक स्वागत गीत के साथ की गई। इसके बाद पहले सत्र की शुरूआत हुई जिसमें प्राथमिक शिक्षा, उच्च प्राथमिक शिक्षा एवं प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली शिक्षिकाओं ने चर्चा करते हुए बताया कि वे किस पद्धति से शिक्षार्थीयों को पढ़ाती हैं और सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनके द्वारा किन गतिविधियों का इस्तेमाल किया जाता है। सत्र में श्री मति कशिश (प्राथमिक शिक्षा, सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका के पुरूस्कार से सम्मानित), श्री मति शोभा बाजपेयी (उच्च प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में लगभग 18 वर्षों से काम करने का अनुभव), और श्री मति प्रीति (सहजनी शिक्षा केन्द्र में शिक्षिका) ने अपने अनुभवों को साझा किया और सत्र का संचालन श्री मति पूर्णिमा गुप्ता द्वारा किया गया। कशिश जी द्वारा बताया गया कि किस तरह सरल एवं रोचक गतिविधियों द्वारा बच्चों की पढ़ने लिखने में रूचि को पैदा कर बनाए रखा जा सकता है। वे बच्चों के लिए गणित को रूचिकर बनाने के लिए गिनती सिखाते समय चित्र बनवाती हैं; जितनी संख्या उतने ही चित्र और ऐसी ही अन्य गतिविधियों का इस्तेमाल करती हैं। इस तरह की गतिविधियों के चलते बच्चे कक्षा में बहुत आनन्द लेते हैं और इनके माध्यम से जल्दी सीखते हैं।

वहीं दूसरी ओर बडी उम्र की महिलाओं के साथ काम कर रहीं प्रीति जी ने बताया कि महिलाओं को शिक्षा से जोडना बहुत कठिन काम है क्यों कि आज के दौर में पढ़ाई का एक ही फायदा नज़र आता है और वो है नौकरी। यदि पढाई से नौकरी न मिले तो उसमें समय देने का क्या मतलब। इसलिए महिलाओं को यह समझाया गया कि वे जो हिसाब करती हैं वह मौखिक होता है जिसे लम्बे समय तक याद रख पाना मुश्किल है। यदि वे लिखित में हिसाब किताब करना सीख लेंगीं तो उन्हें फायदा होगा। उनके साथ काम करते हुए यह भी समझ में आया कि बडी उम्र की महिलाओं के साथ पढ़ाई लिखाई में कुछ भी थोपा नहीं जा सकता है बल्कि सीखने–सिखाने की पद्धति में उनके अनुभवों को जोडने की ज़रूरत है ताकि पढ़ाई जा रही विषय वस्तु का उनके दिमाग में मतलब बने और पढ़ने में उनकी रूचि बनाई जा सके। इसी में जोड़ते हुए अन्य शिक्षिकाओं ने भी अपने अनुभवों को साझा करते हुए बताया कि जब शिक्षार्थी सीखते हैं और लिखते हैं तो उनके काम की सराहना करने की ज़रूरत है जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है।

शोभा जी ने आदिवासी बच्चों के साथ किए गए अपने काम के अनुभवों मंच पर साझा करते हुए बताया कि उन्हें हिन्दी और गणित सिखाने की शुरूआत कार्ड के माध्यम से की गई। और इस सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में उनकी अपनी भाषा को महत्व दिया गया, भाषा वह मज़बूत कडी है जिसके द्वारा लर्नर के साथ सीधा रिश्ता जुडता है। इस पूरी प्रक्रिया में लाइब्रेरी की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

सत्र को समेकित करते हुए पूर्णिमा जी ने चर्चा में उठाए गए महत्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित करते हुए कहा कि सीखने–सिखाने की सामग्री निर्माण करने की प्रक्रिया में सीखने वालों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और जो लोग फेमिनिस्ट तरीके से काम करते हैं वे इस प्रक्रिया में सीखने वालों को शामिल करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने सीखने वालों के सन्दर्भ को महत्ता देने पर ज़ोर दिया जिसमें उसकी संस्कृति, भाषा व अनुभव सभी आते हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। सिखाने की प्रक्रिया में विषय वस्तु का जुडाव शिक्षार्थी के सन्दर्भ से होने पर सीखना जल्दी होता है। महिलाओं के साथ काम करते हुए सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में महिलाओं की ज़रूरतों को शिक्षा के साथ जोडना चाहिए। इसी के साथ उन्होंने शिक्षिका की भूमिका और उसे जिस तरह से देखा जाता है उस पर ज़ोर देते हुए कहा कि शिक्षिका पर भी एक भार होता है कि उसे सब आना चाहिए जबकि वास्तविकता में शिक्षिका भी सीखने की प्रक्रिया में होती है। उनके द्वारा इस बात पर ज़ोर दिया गया कि पढ़ने–पढ़ाने की प्रक्रिया को

डिज़ाइन करते हुए सीखने वाले को केन्द्र में रखना ज़रूरी है ताकि उसे अधिक उपयोगी एवं कारगर बनाया जा सके।

जहां पहले सत्र में सीखने–सिखाने के तरीकों एवं उसमें ध्यान रखने वाली बातों की चर्चा पर फोकस किया गया वहीं दिन के दूसरे हिस्से में साक्षरता कार्यक्रम की सीमाओं, चुनौतियों व नई संभावनाओं पर चर्चा की गई। इस सत्र के पैनल में श्री मति शालिनी, जी डी एस (लखनऊ), श्री मति पुष्पा, वनागंना (बांदा), श्री मति मीना, सनदकदा (लखनऊ), श्री मति ग्यासी, एस एस के (ललितपुर), और श्री मति नीलम, बायफ (प्रतापगढ़) ने हिस्सा लिया और संचालन श्री मति अर्चना द्विवेदी द्वारा किया गया। सत्र की शुरूआत पैनल पर आए सदस्यों से कुछ सवालों पर सोचते हुए करने के आग्रह के साथ हुई जैसे साक्षरता कार्यक्रम में काम करते हुए किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और 3 वर्ष पूरे होने व कार्यक्रम के खत्म होने के बाद हम उसे आगे कैसे बढ़ा सकते हैं। साथ ही पैनल पर बैठे सदस्यों द्वारा उन अनुभवों को साझा करने को कहा गया जो उनकी अपनी संस्था के काम के साथ साक्षरता के जुडाव को बता सकें।

शालिनी जी ने बताया कि उनकी संस्था मुख्य रूप से आजीविका (कृषि) पर उत्तर प्रदेश के 3 जिलों में काम करती है और उन्होंने कृषि सम्बन्धी अवधारणाओं को साक्षरता एवं गणित के साथ जोडने का प्रयास किया है। जैसे किसान को नई–2 तकनीक से कृषि की जानकारी दी जाती है जैसे लाइन से बोना है; मतलब ल, इ, न, अक्षर और आ मात्रा। यह इसलिए भी ज़रूरी हो जाता है क्यों कि इतना काम करने के बावजूद भी महिलाएं अपने काम का लेखा जोखा रखने के लिए आदमियों पर निर्भर रहती हैं। इस काम को करते हुए सबसे बडी चुनौती जो उन्होंने महसूस की वह है पूरे कार्यक्रम के दौरान टीचर में प्रेरणा को एक स्तर तक बनाए रखना। इस चुनौती से जूझने में निरन्तर से काफी सहयोग प्राप्त हुआ है।

वनागंना से आई सदस्या ने बताया कि उन्होंने काम की शुरूआत पानी के मुद्दे से की, महिलाओं को हैण्ड पम्प मैकेनिक का प्रशिक्षण दिया और इस काम को महिलाओं ने करना शुरू किया। महिलाओं को अपने हक के लिए आवाज़ उठाने के लिए तैयार किया। इन सभी कामों में साक्षरता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संस्था के जो काम चल रहे हैं उनसे केन्द्र की महिलाओं को जोडने की कोशिश की। एक अन्य प्रतिभागी ने बताया कि महिलाओं ने केन्द्र पर पढ़ने के बाद कहीं बाहर जाने पर उसका उपयोग प्लेटफॉर्म नम्बर या गाडी नम्बर पढना शुरू किया और इस तरह से जीवन में आ रही चुनौतियों से लड़ना सीखा। कार्यक्रम के दौरान आने वाली अन्य चुनौतियों के बारे में बात करते हुए ग्यासी जी ने बताया कि महिलाओं के ग्रुप बनाना और टारगेट पूरा करना एक बडी चुनौती होती है क्यों कि महिलाओं की पढ़ाई के बारे में बात करो तो पहला सवाल उठता है कि अब ये पढ़कर क्या करेंगीं। इसलिए एस एस के में साक्षरता के सम्बन्ध को मनरेगा, शिक्षा अधिकार कानून और सशक्तीकरण आदि के साथ बनाने की कोशिश की है।

अर्चना जी ने इन बातों को सुनते हुए यह प्रश्न किया कि एक बार कोर्स पूरा हो जाए तो फिर क्या। इस बात पर ज़ोर दिया गया कि उन अलग–अलग तरीकों को ढूंढना होगा जिससे कोर्स पूरा होने के बाद भी महिलाओं के साक्षरता कौशल को मज़बूत किया जा सके एवं प्रतिभागियों से पूछा गया कि उन्होंने ऐसे कौनसे तरीके अपनाए जिनसे महिलाओं को अपनी साक्षरता को मज़बूत करने में मदद मिली।

बायफ से आईं नीलम जी ने साझा किया कि साक्षरता कार्यक्रम के पूरे हो जाने के बाद भी वहां की महिलाएं अपनी पढ़ाई को जारी रखे हुए हैं। सेन्टर पर आने वाली प्रत्येक महिला 10 रूपये प्रति माह देती है जिसे इकट्ठा कर टीचर को मानदेय दिया जाता है। इस तरह से पहले 25 महिलाएं जुडी थी जिनकी संख्या अब बढ़कर 40 हो गई है। अन्य संस्थाओं के साथ भी नेटवर्किंग करने का प्रयास किया गया है जिससे इन महिलाओं में अन्य कौशलों का भी विकास किया जा सके। जिन महिलाओं ने साक्षरता कोर्स को पूरा किया है वे अब स्वयं सहायता समूह की विभिन्न गतिविधियों में भाग लेती हैं। संस्था में जब सोलर लैम्प बनाने का प्रोजेक्ट आया तो इन महिलाओं ने भी उसमें रूचि दिखाई। परन्तु इस प्रोजेक्ट में 5वीं पास लोग ही जुड सकते थे कुछ महिलाओं ने तीसरी की परीक्षा दी और उसमें पास होने पर उन्हें इस काम से जोडा गया। नीलम जी ने यह भी बताया कि हमारे यहां महिलाओं ने एक दूसरे से पढ़ना शुरू किया है; जो महिलाएं पढ़ना लिखना सीख चुकी हैं वे अब दूसरी महिलाओं को पढ़ा रहीं हैं।

जी वी एस एस से आई शिक्षिका ने बताया कि उनके यहां एक महिला के पति को कभी काम मिलता तो कभी नहीं उसने पढ़ना लिखना सीखने के बाद मछली पालन का काम शुरू किया और इस तरह से साक्षरता के कौशलों को ज़िदंगी से जोडा। जिन महिलाओं ने कोर्स को पूरा किया है वे अब स्वयं सहायता समूह की बैठकों का संचालन करती हैं और उन महिलाओं को प्रति माह बैठक के हिसाब से पैसा मिलता है।

सद्भावना से आईं प्रतिभागी ने उनकी संस्था द्वारा जेल में रहने वाली महिलाओं के साथ चलने वाले काम के अनुभवों को बांटते हुए कहा कि जेल में अधिकतर महिलाएं असाक्षर हैं। एक महिला से कत्ल के केस में सादे पन्ने पर हस्ताक्षर करवाए गए और फिर उसमें उसे ही फंसा दिया गया। ऐसे में महिलाओं को किसी

तरह की कानूनी सहायता भी नहीं मिलती है। वे अपने लिए आए पत्रों को भी नहीं पढ़ सकती हैं और उन्हें आदमियों से पढ़वाती हैं। हम उन्हें साक्षर कर किन्हीं तकनीकी कोर्स से जोडने की कोशिश करते हैं।

अर्चना जी ने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि हमें वंचित वर्ग व अन्य वंचित महिलाओं को साक्षरता से जोड़ना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान स्थिति में बाहरी दुनिया के साथ रिश्ता बनाए रखने के लिए कम्प्यूटर अथवा इन्टरनेट की जानकारी ज़रूरी है और साक्षरता का महत्व तभी है जब उसका इस्तेमाल नई चीज़ों के सीखने में किया जा सके जो कि आपके अनुभवों में निकलकर भी आया है। आज के दौर में सबसे ज्यादा बात होती है डिजिटल साक्षरता की।

इस पर एक शिक्षिका ने बताया कि जिन लोगों को पढ़ना लिखना नहीं आता वे भी वोइस सर्च के द्वारा इन्टरनेट पर जानकारी निकाल सकते हैं। एक महिला ने गूगल पर कपडों के अलग–अलग डिज़ाइन इसी तरह से ढूंढे। जिस पर यह प्रश्न रखा गया कि यदि ऐसा हो जा रहा है तो लिखना–पढ़ना सीखने की ही क्या ज़रूरत है।

अतं में सत्र समेकन के दौरान अर्चना जी ने यह दोहराया कि देखा जाए तो सही मायने में डिजिटल साक्षरता के लिए पहले साक्षर होना बहुत ज़रूरी है नही ंतो वोईस सर्च में मिलने वाली जानकारी का लाभ उठा पाना भी बहुत सीमित दायरे में हो पाता है। उन्होंने कहा कि हमें शिक्षा को नई तकनीक के साथ जोडने की ज़रूरत है क्यों कि अब तो हर क्षेत्र में यहां तक की सरकारी सुविधाओं को मुहैया करवाने में भी तकनीक का प्रयोग हो रहा है चाहे वह खाद्य सुरक्षा हो या बैंक सम्बन्धी काम। साक्षरता के अपनी ज़िंदगी के साथ जुडाव भी बहुत ज़रूरी हैं और हम अलग–अलग जगहों में भी कैसे जुड सकते हैं उन सभी अवसरों को तलाशने की भी ज़रूरत है तभी इस काम के असल मायने हैं। इन्हीं शब्दों के साथ प्रथम दिन की चर्चाओं को विराम देते हुए दिन का समापन किया गया।

दूसरे दिन की शुरूआत सहजनी की शिक्षिकाओं द्वारा एक गीत और नाटक के प्रस्तुतिकरण से की गई। नाटक में टीचर के लिए घर से केन्द्र तक के सफर में आने वाली चुनौतियों, सीमाओं और सम्भावनाओं को दर्शाने का प्रयास किया गया। नाटक में पुरूष सत्ता और एक दलित शिक्षिका के साथ महिलाओं द्वारा की जाने वाली छूआछूत जैसे पक्षों को दर्शाने की भी कोशिश की

गई। तत्पश्चात सभी सम्भागियों को 8 समूहों में बांट दिया गया और प्रत्येक समूह को चर्चा के लिए दो सवाल दिए गए।

1 साक्षरता कार्यक्रम से जुडने पर आपकी जिंदगी में क्या बदलाव आया

2 कार्यक्रम को आगे कैसे ले जाया जा सकता है

सभी समूहों में चर्चा के बाद उन्हें बडे समूह में की गई चर्चा के प्रस्तुतिकरण के लिए आमंत्रित किया गया। इन प्रस्तुतिकरणों में मुख्य रूप से शिक्षिकाओं से निकलकर आया कि पहले उन्हें घर, परिवार, समाज के लोगो से बात करने में डर लगता था लेकिन अब उनसे तो क्या बडे अधिकारियों, सरकारी शिक्षकों आदि से बात करने भी न तो हिचक होती है और न ही डर लगता है। अब प्रशासन से बात कर लेते हैं। पहले हम घर में व बाहर दोनो जगहों पर पर्दा करते थे लेकिन अब पर्दा नही करते है। ज़रूरत हो तो केवल परिवारों के सदस्यों के लिए पर्दा करते हैं। दलित शिक्षिकाओं ने बताया कि पहले बडी जाति वालों के दरवाजे होकर जाते थे तो चप्पल नहीं पहन पाते थे लेकिन अब चप्पल पहन कर जाने लगे है। जो सर्वण जाति के लोग सवाल करते हैं तो हम अब उनसे सवाल जवाब कर लेते हैं। अपने अन्दर ही जाति को लेकर आए बदलाव को महसूस करते हैं। कुछ शिक्षिकाओं ने अपनी पढ़ाई को भी आगे बढ़ाया है और अपने निर्णय लेना शुरू किया है। इस काम की मदद से समुदाय में एक पहचान बनी है। खुद की कमाई ने अपने ऊपर पैसा खर्च करने की आज़ादी दी है।

कार्यक्रम को आगे ले जाने के प्रश्न पर चर्चा से निकलकर आया कि शिक्षिकाओं ने समुदाय के स्तर पर कुछ महिलाओं को तैयार किया है जो अब कार्यक्रम को आगे लेकर जाएंगीं। एक विचार यह भी रखा गया कि महिलाओं के संगठन तैयार किए जा सकते हैं जो थोडा पैसा साक्षरता के लिए और थोडा स्वयं सहायता के लिए इकट्ठा करें आदि।

इस चर्चा ने सभी शिक्षिकाओं एवं संस्थाओं को कार्यक्रम को आगे के स्तर पर ले जाने एवं महिलाओं की साक्षरता को और पुख्ता कर उसे विभिन्न कामों से जोडने की राह प्रशस्त करने का काम किया। इस चर्चा के बाद विभिन्न संस्थाओं से आई शिक्षिकाओं को सामूहिक रूप से शील्ड देकर सम्मानित किया गया और सभी शिक्षिकाओं के लिए कुछ गीत संगीत के साथ कार्यक्रम का समापन

किया गया।